

इंफॉर्मेशन

भालू परिवार का सबसे छोटा सदस्य - सन बेयर

सूरज के जैसे गुलाबी रोएं होने के कारण इसे सन बेयर यानी सूरज भालू कहा जाता है। मात्र पांच फुट लम्बे इस भालू के बारे में आइए जाने कुछ और रोचक बातें।

वो अपनी लम्बी जीभ से मधुमक्खियों के छत्ते से बड़ी आराम से शहद गटक जाता है। पैरों में इतनी मजबूती होती है कि ये पलक झपकते ही पेड़ की ऊंची टहनियों तक चढ़ जाता है। कद में छोटा होने, छोटे कान और एक छोटा धूथन होने के कारण इसे डोंग बेयर यानी कुत्ता भालू भी कहा जाता है। सूरज भालू दक्षिण-पूर्व एशिया के निचले जंगलों में पाया जाता है। इसे सूरज भालू इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी छाती पर गुलाबी रंग के रोएं का एक गोल घेरा बना होता है।



अमेरिकन ब्लैक बेयर की तुलना में सन बेयर केवल आधे ही बढ़ते हैं। इनकी लंबाई तकरीबन डेढ़ मीटर के आस-पास होती है और वजन सत्तर किलो के आसपास होता है।

ये रात के समय अधिक सक्रिय रहते हैं। ये रात को जंगलों से फल, बेर, छोटे पक्षियों, कीट-पतंगों का शिकार करते हैं। इनमें गजब की सूंघने की क्षमता होती है। अपने चार इंच से अधिक लंबे पंजों की मदद से ये बड़ी तेजी से पेड़ पर चढ़ने में माहिर होते हैं। इन्हीं पंजों की मदद से पुराने पेड़ों पर लगी दीमक को निकालकर खा जाते हैं।

बहुमूल्य देन

कहते हैं कि रोजाना एक सेब खाओ और डॉक्टर को दूर भगाओ। फल मनुष्य को प्रकृति की बहुमूल्य देन हैं। प्रकृति ने इनमें इतने गुण भर दिए हैं कि यदि आप नियमित रूप से अपने भोजन में इन्हें शामिल करते हैं, तो आपको दवाईयां लेने की जरूरत नहीं पड़ती। सेब में विटामिन ए, सी, बी1, बी-2, बी-6, फॉलिक और पैंटोथेनिक एसिड पाया जाता है। इसमें मिनरल जैसे पोटेशियम, आयरन और कुछ मात्रा में कॉपर, मैग्नीशियम व फॉस्फोरस पाया जाता है। सुबह सेब खाने से सुस्ती दूर होती है। यह किडनी में सोडियम क्लोराइड की मात्रा संतुलित रखता है। कब्ज दूर करता है। फ्री रेडिकल्स को खत्म करता है और बुरे कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है।

इनसे तुम दोस्ती कर लो...



वन्य प्राणियों की तेजी से घट रही संख्या से चिंतित होकर अभयारण्यों की स्थापना की गई, ताकि वहां के कुदरती परिवेश में जानवरों को संरक्षित रखा जा सके। हाथी की मस्ती भरी चाल, मोर का नाच, ऊंट की सैर, शेरों की दहाड़ का आप यहां आनंद ले सकते हैं...

मारे देश में विश्व के करीब 60 प्रतिशत शेर, 80 प्रतिशत एक सींग वाले गैंडे और 50 प्रतिशत एशियाई हाथी पाए जाते हैं। लेकिन जंगलों की अंधाधुंध कटाई और शिकार के कारण जानवरों की गिनती लगातार घटती जा रही है। इन जीवों के बचाव के लिए भारत में 70 से ज्यादा नेशनल पार्क और 400 जंगली जीवों के अभयारण्य हैं, इसके अलावा पक्षी अभयारण्य भी हैं। इन मूक जानवरों से दोस्ती करके हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए इन्हें महफूज रख सकते हैं।

काजीरंगा नेशनल पार्क
काजीरंगा नेशनल पार्क विश्वभर में एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है। एक सींग वाला गैंडा, हाथी, भारतीय भैंसा, हिरण, सांभर, भालू, बाघ, चीते, भेड़िया, साही, अजगर और अनेक प्रकार की चिड़ियां जैसे पेलाकन, बत्तख, कलहंस, हॉर्नबिल, आइबिस, जलकाक, अगरेट, बगुला, लेसर एडजुलेंट, रिंगटेल फिशिंग इगल आदि भी यहां पाई जाती हैं। काजीरंगा नेशनल पार्क मध्य असम में 430 वर्ग किमी. इलाके में फैला हुआ है। इसका प्राकृतिक परिवेश जंगलों से युक्त है। यहां बड़ी एलिफेंट ग्रास, पेड़, दलदली जगह व उथले तालाब हैं। इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है।

जिम कोर्बेट नेशनल पार्क
जिम कोर्बेट नेशनल पार्क दिल्ली से 240 किमी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। जंगलों से ढंकी पहाड़ियां और घाटियों के बीच से कल-कल करती नदी बहती है। कई बार इसके तट पर घड़ियाल भी देखे जाते हैं। इस नेशनल पार्क में हाथी, चीता, तेंदुआ, सांभर और भालू भी देख सकते हैं।

सरिस्का नेशनल पार्क



1958 में बना सरिस्का नेशनल पार्क टाइगर रिजर्व के लिए प्रसिद्ध है। यह राजस्थान के अलवर जिले में अरावली की पहाड़ियों पर 800 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां आप जंगल के राजा को उसके परिवार के साथ घूमते हुए देख सकते हैं। पहाड़ों और जंगलों से घिरा यह अभयारण्य स्तनधारी जानवरों, पक्षियों, सांपों, बाघों और तेंदुओं के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व भी है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान सरिस्का में आश्रय लिया था। यहां मंदिरों के अवशेष देखे जा सकते हैं।

केवलादेव नेशनल पार्क
केवलादेव घाना नेशनल पार्क राजस्थान में स्थित एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। यह ढाई लाख पक्षियों का घर है। यहां बड़ी संख्या में साइबेरियाई पक्षी भी आते हैं।

राजाजी नेशनल पार्क
830 वर्ग किमी. इलाके में फैला राजाजी नेशनल पार्क हाथियों की संख्या के लिए जाना जाता है। यह उत्तरांचल में देहरादून से 23 किमी. आगे है। महान स्वतंत्रता सेनानी सी.राजगोपालाचार्य के नाम पर इसका नाम राजाजी नेशनल पार्क रखा गया। यहां हिरण, चीते, सांभर और मोर भी देखे जा सकते हैं। इसके अलावा यह पक्षियों की भी 315 प्रजातियों का निवास है।

दुधवा नेशनल पार्क
दुधवा नेशनल पार्क एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान और बाघ संरक्षित क्षेत्र है। यह उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले में शिवालिक पर्वत श्रेणियों की तराई में स्थित है।

भारत और नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ यह एक विशाल वन क्षेत्र है। दुधवा नेशनल पार्क प्रमुख रूप से बाघों एवं बारहसिंगा के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

गिर वन नेशनल पार्क
गिर वन नेशनल पार्क बाघ संरक्षित क्षेत्र है, जो 'एशियाई बब्बर शेर' के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना 1913 में एशियाई शेरों को संरक्षण प्रदान करने के लिए की गई थी। स्थापना के बाद से यहां सैकड़ों एशियाई सिंहों का जन्म हो चुका है। यह अभयारण्य जूनागढ़ से 60 किमी. दक्षिण-पश्चिम में गुजरात में स्थित है। 1295 वर्ग किमी. इलाके में फैले इस उद्यान में आप तेंदुआ, चित्तीदार हिरण, नीलगाय, चौसिंगा हिरण और चिंकारा भी देख सकते हैं। यहां स्थित विशाल जलाशय में मगरमच्छ भी हैं।

सुंदरबन नेशनल पार्क
सुंदरबन नेशनल पार्क भारत का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है, जो पश्चिम बंगाल में स्थित है। इसमें करीब 250 टाइगर्स हैं। इसे बर्ड वॉचर्स का स्वर्ग माना जाता है। यहां कई रंगे वाले जानवर भी देखे जा सकते हैं। यह वर्ल्ड हैरिटेज साइट भी है।

कान्हा नेशनल पार्क
कान्हा नेशनल पार्क विश्व के सर्वोत्तम संरक्षित वन्य जीव स्थलों में से एक है, जो मध्य प्रदेश में स्थित है। यह 1,949 वर्ग किमी में फैला है। यह राष्ट्रीय उद्यान बारासिंघा के लिए प्रसिद्ध है, जो विश्व में और कहीं भी नहीं मिलता।

जिज्ञासा

जुगनू कैसे चमकते हैं?

अंधेरी रातों में जुगनूओं को चमकते हुए तो आप सबने जरूर देखा होगा। यदि अंधेरा हो, तो जुगनू का बारी-बारी से चमकना और बंद होना रोमांचक और आकर्षक दिखता है। जुगनू लगातार नहीं चमकते, बल्कि एक निश्चित अंतराल में ही चमकते और बंद होते हैं।

जुगनू के पेट में नीचे की ओर स्किन के ठीक नीचे कुछ हिस्सों में रोशनी पैदा करने वाले अंग होते हैं। इन अंगों में एक रसायन होता है। यह रसायन ऑक्सिजन के संपर्क में आकर रोशनी पैदा करता है। वहां एक और रसायन भी होता है, जो इस रोशनी पैदा करने की क्रिया को उकसाता है, हालांकि यह पदार्थ खुद क्रिया में भाग नहीं लेता है।

पुराने जमाने में लोग रोशनी पैदा करने वाले कीटों को पकड़कर अपनी झोंपड़ियों में उजाले के लिए इस्तेमाल करते थे। ये लोग किसी छेद वाले बर्तन में जुगनूओं को पकड़ कर कैद कर लेते थे और रात को इन कीटों की रोशनी में अपना काम करते थे। दूसरे विश्व युद्ध में जापानी फौजी किसी संदेश या नक्शे को पढ़ने के लिए कीटों से निकालने वाली रोशनी की मदद लेते थे।

जुगनूओं के अलावा और भी जीव हैं जो रोशनी पैदा करते हैं। कुछ बैक्टीरिया, कुछ मछलियां, कुछ किस्म के शैवाल, घोंघे और केकड़ों में भी रोशनी पैदा करने के गुण होते हैं। कुछ फफूंद भी चमकने की क्षमता रखती हैं और लगातार रोशनी पैदा कर कीटों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। कुकरमुत्ते की एक किस्म भी रात में बड़ी तेजी से चमकती है।



जमीन के नीचे दुनिया

समय के साथ-साथ कई शहरों का नामोनिशां मिट गया। आज इनके केवल कुछ अवशेष ही बचे हैं, जो इनकी कहानी बताते हैं।

पेट्रा : पेट्रा शहर सातवीं सदी ईस्वी सन् में दुनिया के नक्शे से गायब हो गया। यह व्यापार का बड़ा केंद्र था। हजारों साल तक यह मलबे के नीचे दबा रहा। 1812 में स्विस स्कॉलर ने इसकी पहचान प्राचीन राजधानी नबतियन के खंडहरों के रूप में की। दक्षिणी जॉर्डन में सुदूर रेगिस्तानी दर्रों की एक श्रृंखला फैली हुई है। 2000 साल से भी ज्यादा साल पहले अरेबिया, सीरिया, फिलिस्तीन और मिस्र के बीच व्यापार करने वाले कार्वाले इसी रास्ते से होकर जाते थे। खुदाई से पता चलता है कि नबतियन लोग पानी की सप्लाई को कंट्रोल करने की कला जानते थे।



मोहन जोदाड़ो : 1921 तक सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी, जब तक हड़प्पा और मोहन जोदाड़ो की खुदाई का काम शुरू नहीं हुआ था। यह सभ्यता करीब 4,500 साल पहले यहां रहती थी और हजार साल तक यहां रही। मोहन जोदाड़ो

एक सुव्यवस्थित शहर था। **माचू पिचू :** माचू पिचू की खोज पुरातत्ववेत्ताओं ने करीब 100 साल पहले की थी, लेकिन इतिहासकार अभी भी इस प्राचीन शहर की कार्यप्रणाली के बारे में यकीन से कुछ नहीं कर रहे। इका लोगों का लिखने का कोई सिस्टम नहीं था, इसलिए उनका कोई लिखित रिकॉर्ड भी नहीं है। माना जाता है कि इका लोगों ने 1430 ईस्वी सन् के आसपास इसका निर्माण शुरू करवाया था, पर करीब सौ साल बाद इका शासकों ने इसे त्याग दिया, क्योंकि उस समय स्पेन ने इका सम्राज्य को हरा कर कब्जा कर लिया था।

कारवां और भी : प्लेंक मैक्सिको, स्टोनहेंज, इंग्लैंड, पलमिरा, सीरिया, टैनिंस, मिस्र, पर्सपोलिस, ईरान, ग्रेट एनक्लोजर, जिम्बाबवे, निमरूद, इराक, मेसा वर्दे, कोलोराडो, प्राचीन ट्राय।

हिरण और खरगोश की दोस्ती तो आप देख ही रहे हैं न, लेकिन ये तस्वीर कुछ बेरंग-सी है। तो फिर इसमें मनचाहे रंग भर डालिए।



चोंच का कमाल

कठफोड़वे (वुडपैकर) की 200 से ज्यादा प्रजातियां दुनियाभर में पाई जाती हैं। इन्हें जंगलों में रहना पसंद है। पेड़ों की शाखाओं को चोंच से छेदते हुए ये बहुत शोर करते हैं। माना जाता है कि यह उनका कम्प्यूनिकेशन का तरीका है। लकड़ी में वे इसलिए भी चोंच मारते हैं, ताकि पेड़ों की छाल के नीचे और शाखाओं पर छुपे हुए छोटे-छोटे कीड़े खा सकें। इनकी लंबी जीभ कीट-पतंगों को पकड़ने में इनकी मदद करती है।

कठफोड़वे अपना घोंसला बनाने के लिए भी चोंच का ही सहारा लेते हैं। ये अपनी चोंच से पेड़ की शाखाओं में छेद बनाते हैं, जो 15 से 45 सेंटीमीटर तक गहरे होते हैं। इन्हीं छेदों

में ये अपना घर बनाते हैं और अंडे देते हैं। कठफोड़वे की चोंच बहुत मोटी होती है और इनके सिर में एक खास किस्म की पैडिंग होती है, जिससे वह चोंच मारते वक्त मिलने वाले तेज झटकों से सुरक्षित रहता है।

छोटी टांगों और तीखे नाखूनों के कारण ये पेड़ की छाल के साथ आसानी से चिपक जाते हैं। इनके पैरों में दो खुर आगे और दो पीछे की ओर होते हैं। इसे 'जाइगोडेक्टिल फीट' कहते हैं।

ये दोनों मिलकर अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं। जन्म के समय इनके बच्चे अंधे होते हैं और उनके शरीर पर पंख भी नहीं होते।



कहानी

शहर को करीब से देखने का बड़ा मन था दो मेढक दोस्तों का, सो वो खाने का सामान बांधकर शहर की ओर बढ़ चले। फरटि से दौड़ती गाड़ियां और ऊंची इमारतें देखने को मिली, फिर जाने क्या हुआ जो इनकी जान पर बन आई। पढ़ें और जान जाएं...!!!

बहुत समय पहले की बात है। जंगल में तालाब के किनारे एक पेड़ के नीचे दो मेढक रहते थे। एक दिन उन दोनों ने सोचा- 'हमने तो बाहर की दुनिया देखी ही नहीं, जंगल के बाहर भी तो कुछ होगा। चलो जरा इसानों की दुनिया में घूम कर आते हैं।'

खाने-पीने का थोड़ा-सा सामान लेकर वे दोनों निकल पड़े। फुदकतेफु दकते वे जंगल की सीमा को पार करके शहर पहुंचे। वहां उन्होंने बहुत कुछ देखा- बड़ी-बड़ी ऊंची इमारतें, प्रदूषण फैलाते वाहन, रोटी कमाने की दौड़ में भागते हुए लोग, खेलकूद और पढ़ाई में मस्त नन्हें- नन्हें बच्चे और बहुत शोरगुल। उन्हें अपने घर की याद आने लगी। थकने की वजह से उनको प्यास भी लग आई। पानी के साथ बैठने के लिए ठंडे स्थान की तलाश भी करने लगे। खोजते-खोजते वे एक दूधवाले की दुकान में घुस गए। वहां एक बाल्टी रखी थी। उन्हें लगा कि इस बाल्टी में पानी होना चाहिए। फिर क्या था, झट से दोनों ने एक ऊंची छलांग लगाई और पहुंच गए उस बाल्टी के अन्दर।

पर यह क्या? बाल्टी में तो पानी नहीं था। वह तो मलाई से भरी हुई थी। बेचारे दोनों मेढक उस मलाई में डूबने लगे और उनका दम घुटने लगा। एक मेढक ने सोचा- 'मेरा तो अंतिम समय आ गया है हाय रे, मेरी किस्मत! शहर आकर

इन अनजान लोगों के बीच ही मरना था।' उसने अपने ईश्वर को याद किया और मौत का इन्तजार करने लगा।



परन्तु दूसरा मेढक हार मानने को तैयार नहीं था। वह कोशिश करने लगा कि किसी तरह उस मलाई भरी बाल्टी में से वह बाहर निकल आए। वह अपने पैर जोर से चलाने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी वह बार-बार फिसल जाता। फिर भी उसने अपना दिल छोटा नहीं किया। लगातार कोशिश करता रहा और अपने पैर चलाता रहा। अरे यह क्या! अचानक उसने देखा कि वह ऊपर उठने लगा। उसके लगातार जोर से पैर चलाने से मलाई भी लगातार हिल रही थी और वह मक्खन बनने लगी। मेढक में उम्मीद की लहर दौड़ गई। वह बहुत थक चुका था, लेकिन पैर चलाता रहा। फिर क्या था! मक्खन बनता गया और आखिर में उस मक्खन के ढेर पर सवार वह साहसी मेढक ऊपर उठने लगा। जब मक्खन छछ के ऊपर तैरने लगा, तब उस साहसी मेढक ने बाल्टी से बाहर छलांग लगा दी। अपनी हिम्मत, लगन, मेहनत और जीने की उमंग के कारण वह बच गया, परन्तु निराशावादी मेढक उसी मलाई की बाल्टी में डूब कर मर गया।